श्री मल्लिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(चौबीला छंद)

बहुत बुलाया मैंने भगवन्, अब मैं ही खुद आऊँगा।
नहीं सुनाया अब तक तुमको, अब निज व्यथा सुनाऊँगा।।
सुनकर मेरी व्यथा कथा को, है विश्वास पुकारोगे।
अनंत दुख से व्याकुल मुझको, भव से पार लगाओगे।।
मल्लिनाथ है नाम तुम्हारा, दयासिंधु कहलाते हो।
श्रद्धा से जो भक्त पुकारे, उसके हृदय समाते हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(आडिल्ल छंद)

ज्ञान कलश में शुद्ध नीर निर्मल लिया।
मिथ्यातम धोने हेतु पद धार किया।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करने जन्म रोग को मैं हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं...।

अनंत युग का प्यासा ज्ञान पिपासा है।
शांति शाश्वत मुझको मिलेगी आशा है।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके भवाताप को मैं हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म मरण की वेदना से रोता हूँ।
कर्म बंध के भार को मैं ढोता हूँ।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करने अक्षय जिनपद को हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय की अभिलाषाएँ भटकाती।
ब्रह्म रूप में लीन नहीं होने देती।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके परम् ब्रह्म पद में रमूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण शुद्ध चेतन चिन्मय चिद्रूप हूँ।
फिर भी जड़ संबंध किया विद्रूप हूँ।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके समता रस का पान करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप भू पर नभ में सूरज तारे हैं।
अंधकार हरने बेवस बेचारे हैं।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके ज्ञान दीप उर में ध रूँ।।6।।

ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म सदा मेरी बुद्धि को भ्रष्ट करें।
धूप चढ़ाऊँ आज सारे कर्म जरें।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शनर मैं करूँ।
पूजन करके वसु कर्म को नष्ट करूँ।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
इंद्रिय सुख के फल हेतु मैं व्याकुल हूँ।
प्रभु दर्श पा, शिव फल पाने आकुल हूँ।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करकेमोक्ष महापद मैं वरूँ।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अर्घ्य अर्पण कर निज गुण में लीन रहूँ।
जिन समान ही शीघ्र नाथ अरिहंत बनूँ।।
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शनर मैं करूँ।
पूजन करके मुक्तिवधू को मैं वरूँ।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज- कर लो जिनवर का गुणगान....)
देव मनाये गर्भ कल्याण, आई शुभ की घड़ी।
आई शुभ की घड़ी, देखो मंगल घड़ी....।।
अपराजित अनुत्तर छोड़ा, मिथिलापुर में आये।
निद्रा में शुभ स्वप्न देख, माँ प्रभावती सुख पाये।।
सुरपति करें गुणगान, चैत्र सुदी एकम् है महान।
करलो जिनवर का गुणगान, आई शुभ की घड़ी।।1।।
ऊँ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मगसिर सुदी एकादशमी को कुंभराज गृह आये।
जन्मोत्सव में मंगल उत्सव, गा अभिषेक कराये।।
देव मनाये जन्म कल्याण, ले गये पाण्डुक शिला महान।
करलो जिनवर का गुणगान, आई जन्म की घड़ी।।2।।
ऊँ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लएकाश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्मोत्सव के समय प्रभु ने, विद्युत अस्थिर देखा।
जयंत पालकी में लेकर, सुर दल शालीवान पहुँचा।।
देव मनाये तप कल्याण, करने चले आत्म कल्याण।
करलो जिनवर का गुणगान, आई तप की घड़ी।।3।।
ऊँ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अशोक तरु के नीचे प्रभु ने, केवलज्ञान उपाया।
चार घाति कर्मों का क्षयकर, समवसरण ही भाया।।
देव मनाये ज्ञान कल्याण, प्रभु की ध्वनि खिरी है महान।
करलो जिनवर का गुणगान, आई ज्ञान की घड़ी।।4।।
ऊँ ह्रीं पौषकृष्णद्विश्तीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
फाल्गुन शुक्ला पंचम को अपराह्न समय जब आया।
सम्मेदाचल संबल कूट से, महा मोक्ष पद पाया।।
देव मनाये मोक्ष कल्याण, पहुँचे जिनवर मुक्तिधाम।

कर लो जिनवर का गुणगान, आई मोक्ष की घड़ी।।5।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण अमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य
'ॐ ह्रीं आर्हं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'
जयमाला
दोहा
मल्लिनाथ जिनराज की, जग में कीर्ति विशाल।
बाल ब्रह्मचारी प्रभो, नमन करूँ त्रय काल।।1।।
(चौपाई)
वंदन जिन श्री मल्लिनाथ, हम गाये तव गुण की गाथा।
भेष दिगम्बर आतम रुचि जागी, बिन उपदेश नाथ वैरागी।
विद्युत अस्थिर होते देखा, छोड़ दिया जग वैभव लेख।।3।।
जय श्री मल्लिनाथ हमारे, लाखों भविजन तुमने तारे।
जय-जय मुक्तिरमा पति देवा, सौ-सौ इंद्र करे तुम सेवा।।4।।
जय आनंद निधान जिनेशा, हरो अमंगल दोष अशेषा।
बाल ब्रह्मचारी जिनराई, मुक्तिरमा से प्रीत लगाई।।5।।
कुमार वय में दीक्षा धारी, द्रव्य भाव हिंसा परिहारी।
मोह मल्ल को नाश किया है, निज आतम को जान लिया है।।6।।
प्रभु सोलह कारण आराधे, तीर्थ प्रवर्तन सब सुख भासे।
मास पूर्व ही योग निरोधा, योग रहित हो शिव को साधा।।7।।
गणधर हुए अट्ठाईस सारे, उन्हें त्रियोग से नमन हमारे।
मैं संयम की पाऊँ नैया, शिवपथ के हो आप खिवैया।।8।।
स्वानुभूति तरणी गंभीरा, आये मोक्षपुरी के तीरा।
जिनवर काटे कर्म जजंरा, चऊ गतियों की नाशी पीरा।।9।।
मैं भी ऐसा जीवन पाऊँ, निकट कापके शीश झुकाऊँ।
जपूँ सदैव प्रभु दिन रैना, जाग मेरी पुण्य सुसेना।।10।।
महानजिन श्रीमल्लिनाथा, नष्ट किया वसुविधि का खाता।
जिनवर मुक्तिपुरी के वासी, उसी पंथ का मैं प्रत्याशी।।11।।
प्रभुवर आत्म भवन में आये, अनंत सुख के उपवन पाये।
मल्लिनाथ पद शीश नवाये, प्रभु समान निज पद हम पाये।।12।।
दोहा
कलश चिह्न लख चरण में, इंद्र करें जयकार।
संबल मल्लीनाथ दो, हो जाऊँ भव पार।।13।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
घत्ता
हे मल्लिनाथ जिनेश्वर, मेरे ईश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः।।